माधव नागदा

परिवार की लाड़ली

ई-मेल-madhav123nagda@gmail.com

एक साथ तीन पीढ़ियाँ गाँव के बस स्टेण्ड पर बस का इंतजार कर कही थीं। दादी, माँ, पिता, बेटा और उसकी नई-नवेली बहू। बस स्टेण्ड हाइवे के किनारे था। हालाँकि यातायात की कमी नहीं थी; लेकिन लोकल बसों की कमी थी। फलस्वरूप लोगों को घंटों इंतजार करना पड़ता था।

समय गुजारने के लिये बेटे ने एक तरीका ढूँढ निकाला। वह आते-जाते ट्रकों के पीछे की लिखावटों को पढ़ने लगा । जरा जोर से, ताकि सब सुन लें। कोई रोमांटिक-सी बात होती तो बहू की ओर देखकर और जोर से बोलता । बहू घूँघट कुछ ऊपर उठाती, नीचे का ओंठ दाँतों तले दबाती और सबकी नजरें बचाते हुए पति की ओर आँखें तरेरती। पति को पत्नी के चेहरे की यह लिखावट ट्रक की लिखावट से भी ज्यादा रोमांचित कर देती। उसे इंतजार में भी अनोखा आनंद आने लगा।

अभी-अभी मार्बल से लदा एक ट्रक गुजरा था। ओवरलोड। धीमी रफ्तार। दर्द से कराहता हुआ-सा। लिखा था—'परिवार की लाडली'। बेटे ने कहा, "वो देखो, परिवार की लाडली जा रही है।" और बड़े लाड़ से पत्नी को निहारा।

"हुंह, इतना तो बोझा लाद रखा है और परिवार की लाड़ली।" पत्नी ने व्यंग्य किया।

सासूजी सुन रही थीं । उन्होंने तिरछी निगाहों से अपने पति व सास की तरफ देखा; फिर बोली, "इतना बोझा लाद रखा है, तभी तो परिवार की लाड़ली है। वरना...।" बहू ने महसूस किया कि सासूजी की आवाज घुटकर रह गई है।

बुढ़ापा

माधव नागदा

संयोग की बात कि बुजुर्ग पिता और उनका युवा पुत्र एक-साथ बीमार पड़ गये। दोनों अपने-अपने कमरे में कुछ दिन बिस्तर पर। जैसाकि रिवाज है—भाई लोग मिलने आते, हालचाल पूछते और हिदायतें देकर विदा हो जाते। मिलने वालों में एक युवक ऐसा था, जो सीधे अपने दोस्त के कमरे में घुस जाता और कुछ देर गप्पें लड़ाकर चलता बनता। जबकि उसे मालूम था कि दोस्त के पिता भी बीमार हैं। उनके हालचाल उसने कभी नहीं पूछे।

एकदिन उन्होंने अपनी पत्नी का ध्यान इस ओर आकर्षित किया। पत्नी को भी अखरा। दोस्त पुत्र के कमरे में ही था। उसने जाकर कह ही दिया, "दिनेश, तेरे अंकलजी क्या शिकायत कर रहे हैं।"

"क्या, अंटीजी?"

"कि दिनेश मेरी तबीयत की खैर-खबर तो लेता ही नहीं है। यह भेदभाव क्यूँ?"

जवाब सुनने के लिए वे भी धीरे-धीरे चलकर पुत्र के कमरे तक पहुँच गये। उन्हें क्षीण-सा सुनायी दिया—'अंकलजी की तो उमर पूरी होने को आयी है। उनकी तबीयत पूछकर क्या करना है।'

कौन बोला? दिनेश के चेहरे पर झेंपभरी मुस्कान थी। पुत्र मौन था। बहू उनके लिए दूध का गिलास लिए खड़ी थी, चुपचाप। वे बेचैन हो उठे। और तो यहाँ कोई नहीं दिख रहा है। फिर यह कटु सत्य किसने कहा? कौन बोला?

"मैं बोला।" एकाएक अंतस में आवाज गूँजी।

"मैं कौन?" वे लगभग चिल्ला पड़े।

"तुम्हारा बुढ़ापा।"

जवाब सुनकर वे गये और बिस्तर पर निढाल होकर लेट गये।

बातचीत

"यहाँ तो बहुत बदबू है।" कचरे के ढेर पर पड़े एक भ्रूण ने दूसरे से कहा। कुछ दूरी पर एक कुत्ता मंडरा रहा था।

"हाँ...। आ...ह!" दूसरा कराहा।

"अरे, तुम्हारे बदन से तो खून रिस रहा है। कितने सारे घाव! च्च, च्च।"

"तुम्हारे भी तो कम घाव नहीं हैं। क्या तुम्हें दर्द महसूस नहीं होता?"

"क्या बताऊँ बहन, वे लोग मुझ पर छुरियाँ चला रहे थे तो मेरी माँ कुरला रही थी। मत मारो, मत मारो मेरी बच्ची को। जब मेरे अन्तस में वे ममतामयी चीखें गूंजती हैं तो मैं सारा दर्द भूल जाती हूँ।"

पहले की बात सुनकर दूसरा भ्रूण खामोश हो गया। उसके भीतर न जाने कैसी खलबली मची कि कचरे के ढेर पर बवंडर नाचने लगा। हवाएँ बेचैन हो उठीं। अन्ततः उसने चुप्पी तोड़ी, "तुम भाग्यशाली हो बहना। मेरी माँ तो...मेरी माँ तो...।" आगे वह कुछ नहीं बोल पाया।

"क्या हुआ तुम्हारी माँ को?" पहले ने करुणापूर्वक पूछा।

"मेरी माँ तो मेरे कत्ल की साजिश में शामिल थी।" यह कहते हुए भ्रूण के दिल से ऐसी विचित्र आवाज आयी जैसे कोई सिसकियाँ भर रहा हो।

इतनी देर से कुत्ता चुपचाप बैठा बड़े गौर से दोनों की बातचीत सुन रहा था। अब अचानक शहर की ओर मुँह करके रोने लगा, हा ऊ...ऊ...।